Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय ज्ञान परंपरा की वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ. ज्योति पटेल*

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, टीकमगढ (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारत सांस्कृतिक रूप से एक समृद्धशाली देश है, जिसकी ज्ञान परंपरा देश की सांस्कृतिक, संरक्षण एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतीय ज्ञान परंपरा में वेद, उपनिषद, स्मृति, दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, शिक्षा शास्त्र आदि का विशाल ज्ञान तत्व समाहित है। भारतीय ज्ञान परंपरा भारतीय जनसंख्या को मानव पूँजी के रूप में परिवर्तित करने में सहायक रही है, जिससे देश के सम्पूर्ण विकास में योगदान मिलता रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा अपनी समग्र, सतत और मूल्यांकन आधारित प्रकृति के कारण आज अत्यधिक प्रासंगिक है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से आधुनिक शिक्षा में एकीकृत हो रही है। यह परंपरा पर्यावरण संरक्षण, योग, आयुर्वेद, नैतिकता और 'वसुधैव कुटुम्बिकम' के माध्यम से वर्तमान वैश्विक चुनौतियों जैसे जलवायु परिवर्तन और मानसिक स्वास्थ्य संकट का समाधान प्रस्तुत करती है।

शब्द कुंजी – संस्कृति, ज्ञान परंपरा, प्रासंगिकता, समृद्धशाली।

प्रस्तावना – हमारा देश भारत सांस्कृतिक रूप से धनी देशों की श्रेणी में आता है। हमारे देश के सांस्कृतिक विकास के पथ–निर्माण का कार्य हमारी ज्ञान परंपरा ही करती है, जिसकी सहायता से देश की संस्कृति को संरक्षित, सुरक्षित और विकसित किया जाता है। भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत वेद–वेदांत, उपनिषद, स्मृति से लेकर विभिन्न प्रकार के दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, शिक्षा शास्त्री, नाट्यशास्त्र आदि के ज्ञान का अथाह भंडार है। हमारी ज्ञान परंपरा हमारे देश की जनसंख्या को उत्पादक जनसंख्या के रूप में परिवर्तित करती है। ज्ञान प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति अपनी अंतर्निहित शक्तियों का आभास कर देश के विकास की प्रक्रिया में योगदान देता है। अत: हम कह सकते हैं कि हमारी ज्ञान परंपरा समृद्धशाली परंपराओं में से है।

1. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 –** शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली को शामिल करना ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जरूरी है, जिससे छात्रों में नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा मिलेगा।
2. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण –** भारतीय ज्ञान परंपरा केवल धार्मिक नहीं बल्कि तर्क और अवलोकन और गहन अनुभव पर आधारित है। यह गणित, खगोल विज्ञान, भौतिकी और चिकित्सा के क्षेत्रों में अपना अमूल्य योगदान दे रही है।
3. **मानवीय मूल्य और नैतिकता –** वसुधैव कुटुम्बतकम की भावना के साथ यह परम्पारा प्रेम, आत्म नियंत्रण, सहयोग और नैतिकता पर जोर देती है जो वर्तमान के स्वार्थपूर्ण समय में सामाजिक न्याय के लिए जरूरी है।
4. **स्थायी विकास और पर्यावरण –** भारतीय संस्कृति प्रकृति के साथ संतुलन सिखाती है। प्राचीन ज्ञान में नदियों, वृक्षों और संसाधनों के संरक्षण के प्रति जो सम्मान है वह आज के जलवायु संकट के दौर में सबसे बेहतर समाधान है।
5. **स्वास्थ्य और जीवनशैली –** योग और आयुर्वेद जैसे प्राचीन ज्ञान आधुनिक जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के लिए समग्र उपचार प्रदान करते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा हजारों वर्ष पुरानी है। इस ज्ञान परंपरा में आधुनिक विज्ञान प्रबंधन सहित सभी क्षेत्रों के लिए अदभुत खजाना है। भारतीय ज्ञान परम्परा को अपनाकर हम एक बार फिर विश्व गुरु बन सकते हैं। हमें अपनी मानसिकता को बदलकर अपने जीवन में भारतीयता को अपनाने की जरूरत है। भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान प्रणालियों की एक समुद्ध और विविध श्रृंखला शामिल है। जिसमे दर्शन प्रौद्योगिकी और कला से संबंधित ज्ञान प्रणालियाँ शामिल है। परंपरा लोगों या समाज के एक समूह के भीतर प्रतीकात्मक अर्थ अथवा अतीत में कोई विशेष महत्व रखने वाले विश्वासों या व्यवहारों को कहते हैं। परंपराएं हजारों वर्षों तक बनी और विकसित हो सकती हैं। इसी कारण यह माना जाता है कि परंपराओं का एक प्राचीन इतिहास होता है। साधारण शब्दों में कहें तो परंपरा वह ज्ञान, तकनीकी जानकारी कौशल एवं प्रथाएं है जो एक समुदाय के भीतर पीढ़ी दर पीढ़ी विकसित कायम और हस्तांतरित होती है। भारतीय ज्ञान परंपरा एक कच्ची सड़क के समान है जिस पर कई तरह के पत्थर मिलते हैं, पर साथ में निर्धारित स्थान पर पहुंचने का मार्ग भी बनाती है। हमारे भारत की बात करें तो यहाँ की परंपरा में इतना ज्यादा अदृश्य ज्ञान है जो एक निरक्षर को भी अपने आप में एक वैज्ञानिक की तरह प्रतीत होता है। हमें यह परंपराऐं अपने पूर्वजों से प्राप्त हुई है।

भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषताए:

1. भारतीय ज्ञान परम्परा की सहायता से हम छात्रों में चरित्र निर्माण का कार्य कर सकते हैं।
2. इस परंपरा से भावी पीढ़ी का आत्मविश्वास सशक्त किया जा सकता है।
3. यह परम्परा अनुभव, अवलोकन प्रयोग और कठोर विश्लेषण से विकसित हुई है.

4. ज्ञान यह परंपराएं हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा है और कुछ पारंपरिक पद्धतियों से जुड़े ज्ञान से लोगो की आजीविका चलती है।
5. यह परंपराएं शास्त्रीय ग्रंथो, पांडुलिपियों और मौखिक सिंचार के रूप में उपलब्ध है।

भारतीय ज्ञान परम्परा एक सिद्ध विरासत है। जो कई हजार सालों से चली आ रही है इनमें ज्ञान और विज्ञान लौकिक और पारलौकिक कर्म और धर्म तथा भोग और त्यालग का अदभूत समन्वय है। यह स्वास्थ्य मनोविसन तंत्रिका विज्ञान प्रकति पर्यावरण और सतत विकास जैसे क्षेत्र के अध्ययन को प्रोत्साहित करती है। भारत संस्कृति इतिहास और पीढ़ियों से चली आ रही ज्ञान की समृद्ध भूमि है। आयर्वेद और योग से लेकर सतत कृषि पद्धतियों और स्थापत्य कला के चमत्कौरों तक भारतीय पारंपरिक ज्ञान वैश्विक चुनौतियों के आधुनिक सभाधानों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आज की तेजी से बदलती दुनिया में इस पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित और बढ़ावा दे देना पहले से कही अधिक महत्वपूर्ण है।

सांस्कृतिक विरासत और पहचान – भारतीय पारंपरिक ज्ञान देश की देश की सांस्कृतिक पहचान का आधार है। इसमें न केवल आध्यात्मिक प्रथाएं शामिल हैं, बल्कि प्रकृति, स्वास्थ्य, कला और विज्ञान की गहन समझ भी शामिल है। यह ज्ञान विधि विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों की सांस्कृतिक संरचना में समाहित है। जो विचारों, प्रथाओं और दृष्टीकोणो की विविधता को दर्शाता है। इस ज्ञान का संरक्षण भारत की समद्ध सांस्कृतिक विरासत की निरंतरता बनाए रखने और यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि आने वाली पीढ़ियां अपनी जड़ों से जुड़ी रहे।

सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण – भारतीय पारंपरिक ज्ञान का एक सबसे महत्वपूर्ण पहलू इसकी स्थिरता और प्रकृति के साथ सामंजस्य पर जोर देना है। जैविक खेती, फसल चक्र और वर्षा जल संचयन जैसी पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ भारत में लम्बे समय से प्रचलित हैं, जो टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देती हैं और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करती हैं। वैदिक सिद्धांतों जैसे भारतीय ज्ञान पर्यावरण के साथ संतुलन में रहने पर बल देते हैं, जो जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण क्षरण का सामना कर रही आज की दुनिया में टिकाऊ जीवन और पर्यावरण के अनुकूल प्रथाओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं।

समग्र स्वास्थ्य और कल्याण – आयुर्वेद और योग जैसी पारंपरिक भारतीय चिकित्सा प्रणालियां हजारों वर्षों से प्रचलित हैं और स्वास्थ्य के लिए समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती हैं। ये प्राचीन प्रणालियां मन, शरीर संबंध, पोषण, हर्बल उपचार और मानसिक कल्याण पर केंद्रित हैं। प्राकृतिक उपचार और निवारक स्वास्थ्य देखभाल में बढ़ती वैश्विक रुचि के साथ इस क्षेत्र में भारतीय पारंपरिक ज्ञान स्वस्थ और अधिक टिकाऊ जीवन शैली बनाने का अपार अवसर प्रदान करता है। इन पद्धतियों को आधुनिक स्वास्थ्य देखभाल में एकीकृत करने से चिकित्सा की मौजूदा प्रणालियों को पूरक और बेहतर बनाया जा सकता है, जिससे तनाव प्रबंधन, पुरानी बीमारियों और समग्र स्वास्थ्य के लिए वैकल्पिक समाधान मिल सकते हैं।

ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाना – भारत का अधिकांश पारंपरिक ज्ञान ग्रामीण समुदायों में गहराई से निहित है। स्वदेशी कृषि तकनीकों से लेकर स्थानीय शिल्प कौशल और औषधीय पौधों के ज्ञान तक इन प्रथाओं ने समुदायों को सीमित संसाधनों के साथ समृद्ध होने में सक्षम बनाया है। आज ये परंपराएं ग्रामीण समुदायों को आत्मनिर्भर, लचीला और आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनने के लिए आवश्यक साधन प्रदान करके उन्हें सशक्त बना सकती हैं। जैविक खेती, हस्तशिल्प और स्थानीय उद्योगों जैसे क्षेत्रों में पारंपरिक ज्ञान के उपयोग को बढ़ावा देने से स्थायी आजीविका सृजित करने और सांस्कृतिक प्रथाओं को संरक्षित करने में मदद मिल सकती है।

निष्कर्ष – भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की दिशा तय करने वाली एक गतिशील शक्ति है। यह स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को पुर्नस्थापित करने का एक प्रयास है, जो विश्व की एकता और मानवता का संदेश देती है। भारतीय ज्ञान परंपरा सिर्फ अतीत की बात नहीं, बल्कि सतत विकास ज्ञान-विज्ञान और मानवीय मूल्यों के माध्यम से भविष्य को बेहतर बनाने की कुंजी है। भारतीय ज्ञान परंपरा आज के परिदृश्य में भी लागू है, जो तनाव प्रबंधन आदि जैसे मुद्दों से निपटने के लिए व्यावहारिक सुझाव देती है। यह ज्ञान को एक विशालता प्रदान करती है, जिसका उपयोग लोगों, समुदायों और मानवता को आगे बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। अत: विश्व धरोहर के लिए इन समृद्ध विरासतों को केवल भावी पीढ़ी के लिए पोषित और संरक्षित किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. भारतीय ज्ञान परंपरा विविध आयाम – प्रो सरोज शर्मा
2. भारतीय ज्ञान परंपरा विविध आयाम – डॉ. नीलम यादव
3. भारतीय ज्ञान परंपरा एक विमर्श – डॉ. स्वाती गौर
4. भारतीय ज्ञान प्रणाली परिचय और संभावना –एच.वी.पी. मंडल
5. भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता – डॉ. राम शर्मा
6. प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा – प्रो ए. पी. चौधरी, डॉ. एच-वी पाटील

****